धनेश्वर स्वांइ

अकादेमी पुरस्कार : नृत्य संगीत (मर्दल)

उड़ीसा के पुरी जिले के नाहनतारा गांव में 18 मई 1953 को जन्मे, श्री धनेश्वर स्वेन ने मर्दल वादन में अपना प्रशिक्षण उत्कल संगीत महाविद्यालय, भुवनेश्वर में प्रख्यात गुरु सिंघरी श्यामसुंदर कार और बनमाली महारणा से प्राप्त किया है. 1979 में, वह उसी महाविद्यालय में वाद्य यन्त्र के शिक्षक के रूप में नियुक्त हुए तथा लगभग तीस वर्ष तक वहां कार्यरत रहे.

श्री धनेश्वर स्वांइ ने, 1980 के दशक से ओड़िसी नृत्य में प्रमुख नर्तकियों का उनकी प्रस्तुतियों में साथ देते हुए एक मर्दल वादक के रूप में बहुत ख्याति प्राप्त की है. उसके साथ ही आपने जगह–जगह पर एकल प्रस्तुति का प्रदर्शन कर, ओड़िसी संगीत में मर्दल का एक अलग स्थान प्रतिष्ठित करने में कड़ी मेहनत भी की. भुवनेश्वर में राजा रानी संगीत महोत्सव, वाराणसी में संकटमोचन महोत्सव, और इंडिया हैबिटेट सेंटर, नई दिल्ली में संगीत संध्या, ये कुछ एसे कार्यक्रम हैं जहां आपने एकल प्रदर्शन दिया है। एक उपवादक के रूप में आपने ओड़िसी नर्तकों के साथ भारत, अमरीका, जर्मनी, स्पेन, बेल्जियम, डेनमार्क, नॉरवे, फिनलैंड, चीन, सिंगापुर, मलेशिया, दक्षिण कोरिया, जॉर्डन व इज़राइल में अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए विभिन्न स्थानों की यात्रा की है।

श्री धनेश्वर स्वांइ को नृत्य संगीत के एक रचयिता के रूप में भी जाना जाता है। आपने बहुत सी नृत्य संबंधी रचनाओं के लिए संगीत दिया है, जैसे पंचदेव स्तुति, दशमहाविद्या, युगे युगे जगन्नाथ, और सृष्टि ओ प्रलय. आपने मर्दल, वाद्य वाणी पर अपनी रचनाओं की एक सीडी भी प्रस्तुत की है, जिसके लिए ताल गुणज्ञों से प्रशंसा भी मिली। आपने मर्दल पर कई लेख प्रकाशित किए हैं, और कई संस्थानों में नृत्य संगीत पर कार्यशालाओं का आयोजन किया है।

श्री धनेश्वर स्वांइ को अनेक संस्थाओं द्वारा उनके काम के लिए सम्मानित किया गया है. 1999 में उत्कल साहित्य कला परिषद द्वारा बाद्यश्री की उपाधि से सम्मानित किया गया। 2008 में ओडिशा संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित हुए।

श्री धनेश्वर स्वांइ को नृत्य संगीत मर्दल वादक के रूप में योगदान के लिए संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।